References

1. Adams, C. A., & McNicholas, P. (2016). Making a difference: Sustainability reporting, accountability and organizational change. Accounting, Auditing & Accountability Journal, 20(3), 382-402.
2. Brammer, S., Brooks, C., & Pavelin, S. (2006). Corporate social performance and stock returns: UK evidence from disaggregate measures. Financial Management, 35(3), 97-116.
3. Cho, C. H., & Patten, D. M. (2013). Green accounting: Reflections from a CSR and environmental disclosure perspective. Critical Perspectives on Accounting, 20(4), 441-464.
4. Clarkson, P. M., Overell, M. B., & Chapple, L. (2011). Environmental reporting and its relation to corporate environmental performance. Abacus, 47(1), 27-60.
5. Cormier, D., & Magnan, M. (2007). The revisited contribution of environmental reporting to investors' valuation of a firm's earnings: An international perspective. Ecological Economics, 62(3-4), 613-626.
6. Delmas, M. A., & Toffel, M. W. (2008). Organizational responses to environmental demands: Opening the black box. Strategic Management Journal, 29(10), 1027-1055.
7. Eccles, R. G., Ioannou, I., & Serafeim, G. (2014). The impact of corporate sustainability on organizational processes and performance. Management Science, 60(11), 2835-2857.
8. Eccles, R. G., & Stroehle, J. C. (2017). Exploring social origins in the construction of ESG measures. Journal of Applied Corporate Finance, 29(2), 39-52.
9. Freeman, R. E. (1984). Strategic management: A stakeholder approach. Boston: Pitman.
10. Friedman, M. (1970). The social responsibility of business is to increase its profits. The New York Times Magazine, September 13, 1970.
11. Gao, L., & Zhang, J. (2006). Stakeholder engagement, social auditing, and corporate sustainability. Journal of Business Ethics, 75(3), 363-378.
12. Gompers, P. A., Ishii, J. L., & Metrick, A. (2003). Corporate governance and equity prices. The Quarterly Journal of Economics, 118(1), 107-156.
13. Hahn, T., Preuss, L., Pinkse, J., & Figge, F. (2015). Cognitive frames in corporate sustainability: Managerial sensemaking with paradoxical and business case frames. Academy of Management Review, 39(4), 463-487.
14. Jensen, M. C., & Meckling, W. H. (1976). Theory of the firm: Managerial behavior, agency costs, and ownership structure. Journal of Financial Economics, 3(4), 305-360.
15. Kolk, A. (2008). Sustainability, accountability and corporate governance: Exploring multinationals' reporting practices. Business Strategy and the Environment, 17(1), 1-15.
16. Luo, X., & Bhattacharya, C. B. (2009). The debate over doing good: Corporate social performance, strategic marketing levers, and firm-idiosyncratic risk. Journal of Marketing, 73(6), 198-213.
17. Mitchell, R. K., Agle, B. R., & Wood, D. J. (1997). Toward a theory of stakeholder identification and salience: Defining the principle of who and what really counts. Academy of Management Review, 22(4), 853-886.
18. Ong, T., & Djajadikerta, H. G. (2017). Impact of corporate governance on sustainability reporting: Empirical study in the Australian resources industry. International Journal of Accounting & Information Management, 25(2), 238-256.
19. Reinhardt, F. L., & Stavins, R. N. (2010). Corporate social responsibility, business strategy, and the environment. Oxford Review of Economic Policy, 26(2), 164-181.
20. Russo, M. V., & Fouts, P. A. (1997). A resource-based perspective on corporate environmental performance and profitability. Academy of Management Journal, 40(3), 534-559.

फगुआ पर्व का विश्लेषण

देवेन्द्र साहू
सहायक प्राध्यापक,रिसर्च स्कॉलर,
नागपुरी विभाग
कार्तिक उरांव महाविद्यालय गुमला

फगुआ उमंग और उत्साह का रमणीय पर्व है। फगुआ के रंग सभी के हृदयों में मनमलिनयों को मिटा कर नए प्रेम और आपसी अपनत्व के बंधन में बंध जाते हैं। फगुआ पर्व को फाल्गुन महीने के पूर्णमासी के दिन मनाया जाता है। इस पर्व को पूरे देश में मनाया जाता है। झारखंड प्रदेश में फगुआ मनाने का कुछ अलग दिखाई पड़ता है। फगुआ पर्व को होली पर्व के रूप में सभी समुदाय के लोग मनाते हैं। पूर्णमासी के रात होलिका दहन होते हैं। होलिका दहन के साथ संवत भी काटा जाता है। विक्रम संवत के अनुसार नई साल की शुरुआत संवत काटकर किया जाता हैं। डॉo कलावती ओहदार के मतानुसार–

"फगुआ (होली) पर्व मनाने के कई कारण है–

1. फगुआ (होली) के दूसरे दिन से ही विक्रम संवत का नया साल शुरू होता हैं।
2. होली (होलिका), जो राजा हिरण्य कश्यप की बहन थी, के जलने की याद में मनाया जाता हैं।
3. कृषक अपने खेतों से नया अन्न लाकर इसे गर्म करके आपस में बाटकर खाते हैं। अग्नि देवता को नया अन्न भेंट कर उन्हें प्रसन्न करते हैं।" (1)

बसंत ऋतु का ये सबसे बड़ा त्योहार हैं। वसंत ऋतु में प्रकृति भी रंग-बिरंगे फूल पत्तों से लद जाती हैं। जिससे सबके मन उमंग उत्साह से भर जाता हैं।फगुआ के शाम में गाँव के सभी बुजुर्ग आखरा में जमा हो जाते हैं। युवा बच्चे सभी तैयारी करने लगते हैं। गाँव का पहान एरण्ड या सेमल की डाली काटकर लाता है। और बच्चे लकड़ी पुआल आदि लाकर आखरा में ढ़ेर लगा देते हैं। रसिक युवा मांदर, ढोल, ढांक, नगाड़े करताल, झांझ, मुरली, बांसुरी, आदि वाद्य यंत्र लेकर आ जाते हैं। संवत काटने का निश्चित समय में एरंड या सेमल डाली को पुआल से आग लगाकर पहान एक ही बार में काट देता है। पहान बलुआ से बाकी टहनियों को भी काट देता है। संवत गिर जाता हैं। उसके गिरते ही बच्चे लकड़ी से बनी बाण (छिछीर बाण) मारने लगते हैं। सभी कोई हर्ष उल्लास के साथ संवत की जली राख को माथे पर टिका लगाते हैं। एक -दूसरे को प्रणाम करते हुए आशीर्वाद लेते हैं। बड़े-छोटे सभी कोइ आपस में गले मिलते हैं। उसके बाद मांदर, वादक, ढोल, नगाड़े से ताल उठाते हैं। और आखरा में फगुआ के गीत गूंजने लगते हैं। फगुआ गीत में एरी-एरी-एरी कहते हुए राग पकड़ लेता है। सभी कोई फगुआ संगीत में सराबोर हो जाते हैं। झमने, नाचने, गाने बजाने में रसिक लोग आ जाते हैं। और पूरा रात भर गीत संगीत चलता रहता हैं।

सुबह होने के बाद बच्चे रंग उत्सव के लिए तैयारी करते हैं। युवतियाँ भी खूब रंग खेलते हैं। पूरा गाँव रंगोत्सव में डूब जाता है। मताएं तरह-तरह की पेर पकवान बनाती हैं। फगुवा पर्व के दिन झारखंडी खान-पान सबके घर में बनता है। और सभी लोग एक दूसरे के घर रंग के बहाने तरह-तरह के पकवान भी खाते हैं। दिन भर रंग उत्सव होता है। बुजुर्ग लोग रंग के जगह अबिर लगाते हैं। और एक-दूसरे को अबिर देकर गले मिलते हैं। और आशीर्वाद लेते हैं। यह रंग उत्सव का त्योहार जीवन उमंग के साथ रंगीन बना देता है सभी खूब खुशियां मनाते हैं।

सभी लोग समयानुसार नहा-धोकर खान-पान कर ढोल नगाड़े के साथ निकलते और सभी लोग फगुवा राग-रागिनी में गीत-संगीत करने लगते हैं। नाचने झमने लगते हैं। फगुवा पचरंगी गीत फगुवा पुछारी गीत चलने लगाता है। सेभी लोग अबिर से रंग उत्सव मनाते हैं। बड़ों को अबिर के साथ प्रणाम करते हैं। छोटे को आशीर्वाद और प्यार देते हैं। गीत-संगीत का सिलसिला दूसरे दिन भी रात भर चलता हैं।

फगुवा पर्व नागपुरी समाज में धूमधाम से मनाया जाता हैं। झारखंड प्रदेश में हर पर्व त्योहार को यहाँ के निवासी सदान और आदिवासी मिलजुल कर हर्ष उल्लास के साथ में मनाते हैं। दोनों समुदाय का आपसी प्रेम, मेल मिलाप को देखकर ऐसा लगता है कि यहाँ के निवासी एक दूसरे के बिना अधूरा प्रतीत होता हैं। चाहे कोई भी पर्व त्योहार हो सभी लोग आपसी प्रेम और सौहार्द के साथ मनाते हैं। झारखंड की संस्कृति आदिवासी और सदान दोनों से मिलकर बनी हुई हैं। यहाँ भिन्नता में भी एकता हैं।

फगुआ पर्व में सबके साथ सभी रंग उत्सव करते हैं। इस पर्व में सभी लोग सदान - आदिवासी एक साथ नृत्य संगीत करते हैं।

फगुआ (होली) पर्व की कथा- अन्य पर्व की भांति ही फगुआ पर्व की कथा भी है। ये कथा इस प्रकार है–

प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नाम का एक अहंकारी राजा था। वह नास्तिक विचारधारा वाला राजा था। वह ईश्वर को नहीं मानता था। अपने आप को ही भगवान मानता था। और पूरे राज्य में अपने आप को भगवान घोषित कर रखा था। परंतु उसका पुत्र प्रहलाद ईश्वर भक्त और बड़े ही धार्मिक विचारों वाला बालक था। राजा चाहता था की प्रजा उसकी पूजा करें। एक दिन राजा प्रहलाद के मुंह से सुना कि संसार का मालिक भगवान है और वही इस संसार का संचालन भी करता है। इतना सुनने के बाद राजा प्रहलाद को डराने के लिए तरह-तरह की यातनाएँ देना शुरू कर दिया। प्रहलाद की जान लेने के लिए उसे हाथी से कुचलाने का प्रबंध किया। ये भी बिफल हुआ। तब उसे पहाड़ से भी फेंका गया। अनेक पर्यत्न करने के बाद भी प्रहलाद का कुछ बिगाड़ नहीं पाया तो उसको अपनी बहन होलिका कीगोद में बैठाकर आग में जला देने का कोशिश किया गया। होलिका के पास एक चादर थी जिस पर आग का प्रभाव नहीं पड़ता था। होलिका वही चादर अपने शरीर में ओड़कर आग की चिता में बैठ जाती है। प्रहलाद को गोद में बैठा लेती है। और आग लगा दी जाती है। पर उसी समय हवा की झोंका आ जाती है।और चादर को उड़ाकर प्रहलाद सहित नीचे गिरा देती है। तब होलिका आग में जलकर मर जाती है। और प्रहलाद को कुछ नहीं होता है। इसी की याद में प्रतिवर्ष फाल्गुन पूर्णमासी की रात होलिका दहन किया जाता है। और इसी दिन विक्रम संवत का अंतिम दिन होता है। नव वर्ष की शुरुआत भी इसके बाद हो जाती है। फगुआ (होली) पर्व की कथा भी मिथक जान पड़ती हैं।

इस पर्व की कथा भी समाज को नई संदेश दे जाती है। और बुराई से अच्छाई की जीत होती है। प्रहलाद भगवान का भक्त था इसे मारने का लाख प्रयास किया जाता है। पर उसे कोई भी मार नहीं पाता हैं। जो बुरा कार्य करते हैं उसे बुरे फल ही मिलता हैं।जैसा कि होलिका प्रहलाद का जान मारना चाहती थी। परंतु प्रकृति ने उसे ही नष्ट कर दिया। इस कथा से अच्छाई का संदेश को जाना जाता है। भले ही ये कथा पौराणिक कथा है। इसे लोग मिथक कथा भी कहते हैं। परंतु लोगों का विश्वास है कि यह पर्व की कथा समाज से जुड़ी हुई है। होली पर्व को पूरे देश में मनाया जाता है। और हर जगहों पर अलग-अलग तरीके से मनाया जाता हैं। परंतु सभी पर ये कथा प्रचलित है। ये पुराणों से संबंधित कथा है जो ब्राह्मणों के द्वारा कही जाती हैं।

फगुआ (होली) पर्व के गीत-होली (फगुआ) पर्व के अवसर पर फगुआ गीत गाने का काफी प्रचलन है। नागपुरी भाषा में फगुआ गीत सर्वोधिक है। फगुवा राग का अलग ही महत्व है। नागपुरी लोकगीतों में फगुआ का विशेष स्थान माना जाता हैं। फगुआ राग में लोकगायक एक-दूसरे से प्रश्नोत्तरी गीत प्रस्तुत करता है। जिसे फगुवा पुछारी राग कहा जाता है। और फगुवा पचरंगी गीत भी गया जाता है। जिसमें पाँच रागों के साथ गीत गया जाता है। इस तरह से नागपुरी लोकगीत फगुवा राग में गया जाता है। डॉo कलावती ओहदार के अनुसार एक गीत देखा जा सकता है–

" विरहे तन व्याकुल निसि दिना,
ब्रजनाथ बिना जग धिक जीना ।।धु०।।
मणि बिना फणि जस,जल बीना मीन तस
नारी पुरुष बिना मलिना, ब्रजनाथ बीना जग धीक जीना। ।
अंध विहीन आँखी, पंख विहीन पाँखी,
जैसे कविवर दंत वीना, ब्रजनाथ बिना जग धीक जीना।। " (2)

भगवान श्री कृष्ण के बिना जीवन व्यर्थ है। विरहाग्नि में रात-दिन मन बेचैन है। जिस प्रकार मणि के बिना सांप, जल के बिना मछली, उसी प्रकार पुरुष के बिना नारी है। दृष्टि के बिना आँख, पँख के बिना पक्षी उसी प्रकार कवि दांत के बिना कुछ कहने में असमर्थ हैं। इस गीत के माध्यम से समाज को बहुत ही अच्छी सीख मिलती है। एक दूसरे गीत में भी कवि विरह का वर्णन अति सुंदर ढंग से किया है। प्रिय के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता हैं।

"देइये राखलैं प्रेम कर फाँस गला,
केहे कारणे नहीं आलैं नंदलाला ।।धु०।।
पहले जानती मधे, परती न प्रेम फंदे,
भामिनी भुलाय गेली भखे भला,
केहि कारणे नहीं आलैं नंदलाल ।।धु०।।
ऋतु बसंत महा कंत सजि गेल कहां,
कुहू कुहू कोकिला करत हला,
केहि कारणे नहीं आलैं नंदलाला ।।2।।" (3)

नंदलाला गले में प्रेम का फंदा डालकर पता नहीं, क्यों नहीं आए हैं। अगर पहले से ज्ञात होता तो इस प्रेम रूपी फंदे में नहीं पड़ती। पता नहीं कैसे धोखा हुआ। बसंत ऋतु का आगमन हो गया है। और नंदलाल हमें त्याग कर कहाँ चले गए । कोयल की मीठी कुक विरहाग्नि को और भी तेज कर रही है। श्री कृष्ण के न रहने से विरह का वर्णन किया गया है।

मांदर के जादूगर मनपूरन नायक इस प्रकार लिखते हैं–

"झारखंड प्रदेश में फगुआ गीत एवं नृत्य की एक अलग भूमिका प्रदर्शित होती है। इस त्योहार में रंग अबीर के साथ ढोल, मांदर, नगाड़ा, झांझ एवं करताल के ताल से रसिक नाच-नाच एवं झूम-झूम उठते हैं। " (4)

कवि प्रमोद कुमार राय के मतानुसार—" फगुआ गीत समस्त देश में होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीत ही नागपुरी में फगुआ गीत के नाम से जाने जाते हैं। यह पुरुष समुदाय द्वारा गाए जाने वाला एक नृत्य गीत है। जिसे समूह में आमने-सामने खड़े होकर झूंड में नाचते हुए गया जाता है। " (5)

इस तरह से अनेक विद्वानों का मत है फगुआ गीत- संगीत के बारे में झारखंडी संस्कृति के विद्वान डॉo "गिरिराज" फगुआ गीत नृत्य के बारे में बताते हैं–

"फगुआ गीत-नृत्य यह फाल्गुन और चैत के संधि काल का गीत नृत्य है। फाल्गुन चढ़ते ही फगुआ नृत्य की तैयारी हो जाती है। यह बसंत

उत्सव या होली के अवसर का नृत्य है। प्रकृति के उल्लास के साथ रंग में रंग मिलाने का नृत्य। यह पुरुष प्रधान नृत्य है। इसमें कहीं-कहीं कली (नर्तकी) एक या एक से अधिक सम्मिलित रहती है। ये स्वतंत्र रूप से पुरुषों के मन्हय, भाव, लय, ताल एवं राग के अनुरूप नृत्य करती है।" (6)

नागपुरी समाज में फगुआ गीत गाने, खेलने, बजाने, झूमने का सिलसिला (फागुन) बसंत ऋतु आने के बाद आरंभ हो जाता है। पूरा समाज पुरुष वर्ग खासकर फगुआ नृत्य गीत-संगीत में खो जाते हैं। पूरा उल्लास उमंग के साथ फगुआ गीत का स्वर फूट पड़ता है। बसंत ऋतु श्रृंगार से भरपूर रहती है। उसी तरह रसिका में पूरा श्रृंगार कर आखरा में उतर जाते हैं। पूरा ब्रज में नागपुरी फगुआ (घेरी) गीत गुंजने लगता है। डॉ० कुमारी वासंती के अनुसार– "फगुआ गीत ऋतु गीत है। जो बसंत ऋतु में गाए जाते हैं। बसंत को ऋतुराज भी कहा जाता हैं।वसंत ऋतु का दूसरा नाम मधु ऋतु है। ऋतु चक्र के अनुसार वसंत ऋतु चैत और बैशाख महीने का प्रतिनिधित्व करती है। इसीलिए चैत महीने को मधुमास भी कहा जाता है। किंतु वसंत ऋतु के उल्लास,उत्साह, उमंग, स्फर्ति और आनंद का प्रारंभ फाल्गुन से हो जाता है या यों कहिए कि बसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। फगुआ गीतों का दूसरा नाम होरी गीत भी है। होली अवसर पर गाए जाने वाले गीतों को होरी गीत कहा जाता है।" (7)

झारखंड में फगुआ (होली) को लोकप्रिय पर्व माना जाता है। प्राचीन काल में कृष्ण और गोपियों अपने काल में उत्सव मनाते थे। वही परंपरा आज भी हर क्षेत्र में चलती आ रही है। यह समाज में उमंग उत्साह भर देता है।

अंतर्राष्ट्रीय कलाकार मांदर वादक मनपुर नायक के मतानुसार– "नागपुरी हरी फगुआ गीतों को पाँच भागों में बताकर विश्लेषण किया जाता है। ठेठ फगुआ, छंद फगुआ, पँचरंगी फगुआ, पुछारी फगुआ, बारहमासा फगुआ।"

1. ठेठ फगुआ– यह पुरुष प्रधान नृत्य गीत हैं। इस गीत में लोक गायक पूरा ठेठ राग में गीत को गाता हैं। ठेठ भाषा का भी प्रयोग होता है। कुछ गीतों को उदाहरण स्वरूप देखा जा सकता है।

" बिन पुरूख केरा, नारी हो हरि
के के देखी, मांग सवारी ।।धु०।।
कोरी चीरी पाटी फारी नयना काजर करी
बिना पुरुख केरा,नारी हो हरि
के के देखी मांग सवारी ।।धु०।।" (8)

बिना पुरुष का नारी इस संसार में अधूरा है। यदि पुरुष के अभाव में नारी का सभी तरह का सिंगार महत्व- विहीन हो जाता है। फगुवा पर्व में लोक गायक इसे बड़ी ही रोचकता पूर्ण अभिव्यक्त करता है। आगे ठेठ फगुआ गीत देख सकते हैं–

"अब का करूँ ए सखी, कहलो नी जाए
निपटे नटनागर, देल विसुराय।।
नावा सनेहा बाला, देहूँ राखल उरे साल
श्यामा संताप सूल,हिया में समाय
निपटे नटनागर,देल विसुराय।।
रजनी दिवस मन, जानी रहे छन-छन
नहीं विसुराय मोही, विरल सताप
निपटे नटनागर, देल विसुराय।।
सेज सपन मन, मन कर जाती खन
घासी विफल चित परे मुरझाय
निपटे नटनागर, देल विसुराय ।।" (9)

घासीराम इस गीत में श्रीकृष्ण और गोपियों की वीर का वर्णन हुआ है। महाकवि घासीराम फगुवा गीत के राग रागिनी में श्री कृष्ण की प्रेम में गोपियों का मन वियोग होने पर विरह वेदना से मन भर जाती है

" बासुदेव हे प्रभु चक्रधारी
शहर कोराम्बें गड़ खेलैं होरी।।
ए एरी- - - राम जी के हाथे धनुष बाण सोभयं
के कर हाथे अबिरा रोरी, शहर कोराम्बे खेलैं होरी।।
एरी ए- - केकर संगे सुंदरी सीता शोभे
केकर संगे,जे राधा प्यारी,शहरे कोराम्बे गड़ खेलैं होरी।।" (10)

निष्कर्ष: नागपुरी समाज में फगुवा पर्व का अलग ही महत्व है । झारखंड के सदान आदिवासी दोनों समुदाय इस पर्व को अपने-अपने अनुसार से मनाते हैं। एक दूसरे से गले मिलते हैं। उल्लास उमंग के साथ इस पर्व में गीत संगीत भी करते हैं। फगुआ गीत अधिकतर फाल्गुन मास में ही गाए जाते हैं। फगुआ गीत ऋतुराज बसंत का ऐश्वर्य का वर्णन किया जाता है। बसंत ऋतु में सभी के जीवन में खुशियों के रंगों से भर जाते हैं। सभी तरह के दु:ख मिट जाते हैं। और उल्लास पूर्वक फगुवा पर्व की रंग में रंग जाते हैं। यह पर्व समाज में सामाजिक समरसता स्थापित करता है। सामाजिक जीवन में आपसी लगाव एवं प्रेम का संदेश भी देती है।

****

संदर्भ:-

1. डॉ० कलावती ओहदार, नागपुरी लोकगीतों का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, क्लासिकल पब्लिसिगं कंपनी दिल्ली, पृ० सं०- 117
2. उपर्युक्त , पृ० सं० -117
3. उपर्युक्त, पृ० सं० -118
4. मनपुरन नायक, नागपुरी लोकगीत और मादंर के ताल, झारखंड झरोखा रांची, पृ० सं० -124
5. प्रमोद कुमार राय, झारखंड के क्षेत्रीय पारंपारिक लोकसंगीत, पृ० सं० - 50
6. गिरधारी राम गौंझू , झारखंड के लोकसंगीत , झारखंड झरोखा रांची, पृ० सं० -19
7. डॉ० कुमारी वासंती, नागपुरी गीतों में छन्द रचना, पृ० सं० 197,198
8. मनपुरन नायक , नागपुरी लोकगीत और मादंर के ताल, झारखंड झरोखा रांची, पृ० सं० - 124,125
9. उपर्युक्त, पृ० सं० -124,125
10. निज संकलन